बड़ी अजीब दुनिया है यहां
लोग मिलते कम है
झांकते ज्यादा है।
– अज्ञात

बेहतर शिक्षा और काम

कई युवा बगैर नौकरी किए फ्रीलांसिंग से पैसे कमा रहे हैं। वे वेब ऐंड मोबाइल डिवेलपमेंट, वेब डिजाइनिंग, डेटा एंट्री, इंटरनेट रिसर्च, अकाउंटिंग और कंसल्टेंसी जैसे क्षेत्रों में सक्रिय हैं। बहरहाल, चीजें अभी शहरी मिडल क्लास के लिए ही ज्यादा बदली हैं।

दीप मटपाल।

भारत के यूथ मानते हैं कि उनका जीवन उनके पैरंट्स से बेहतर है, उन्हें अपने अभिभावकों से कहीं अच्छी शिक्षा मिली है और उनका काम–धंधा भी पिछली पीढ़ी से बढ़िया जा रहा है। उनके पास पैसे कमाने के अवसर भी ज्यादा हैं, लेकिन यह स्थिति भारत के अलावा कुछ गिने–चुने देशों में ही है।

चीन, सऊदी अरब, फिलीपींस और मलयेशिया के युवा भारत के युवाओं की ही तरह सोचते हैं लेकिन दुनिया के बाकी देशों के नौजवान ऐसा नहीं सोचते। विश्व आर्थिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) और इप्सॉस के एक सर्वेक्षण के अनुसार अमेरिका, ब्रिटेन, और जर्मनी के यूथ मानते हैं कि उनके अभिभावकों के पास ज्यादा आर्थिक अवसर उपलब्ध थे और वे अपराधों और बाकी संकटों से भी नई पीढ़ी के मुकाबले ज्यादा सुरक्षित थे।

यह सर्वे इन देशों के 22,285 शहरी युवाओं के बीच किया गया। हर सर्वेक्षण की अपनी सीमा होती है लेकिन उससे बदलते ट्रेंड की एक झलक तो मिलती ही है। भारत के संदर्भ में देखें तो यह सर्वेक्षण इस बात का संकेत है कि पिछले कुछेक दशकों के बदलावों का असर अब दिखने लगा है। नब्बे के बाद देश के अर्थतंत्र में व्यापक परिवर्तन हुए। उदारीकरण की नीति के तहत देश का बाजार पूरी दुनिया के लिए खुला और भारत में विदेशी पूंजी निवेश के लिए जमीन तैयार हुई।

निजीकरण ने रोजी–रोजगार का चरित्र बदल डाला। आज के युवा उनकी संतानें हैं, जिन्होंने तेज बदलाव वाले उस दौर की चुनौतियां सीधे झेली हैं। उन्होंने महसूस कर लिया कि नए दौर में जगह बनानी है तो अपने बच्चों को उसके लिए तैयार करना होगा। उन्होंने खुद चाहे जैसी भी शिक्षा पाई हो, अपने बच्चों के एजुकेशन पर भारी खर्च किया। अपने अनुभवों से वे भांप चुके थे कि भविष्य प्राइवेट सेक्टर का ही है, लिहाजा उन्होंने अपने बच्चों को अकादमिक की बजाय तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा दिलाने पर जोर दिया। इसका फायदा यह हुआ कि उनके बच्चों को प्राइवेट सेक्टर की आकर्षक नौकरियां मिल सकीं।

बाजार में कई नई तरह की नौकरियां आईं और उदारीकरण ने भारत में उद्यमिता की गुंजाइश भी पैदा की। पहले की तरह अब कारोबार पर कुछ चुनिंदा घरानों का एकाधिकार नहीं रहा। सबसे बड़ी बात यह है कि सामाजिक मान्यताएं भी बदलीं और कारोबार करने को खराब नजरों से देखने की मानसिकता समाप्त हुई। कई नए सेक्टर खुलने से उद्यमी युवाओं के लिए कारोबार करके पैसे कमाना आसान हुआ।

इसके लिए ऋण और सरकारी मदद अब पहले से ज्यादा उपलब्ध होने लगी है। कई युवा बगैर नौकरी किए फ्रीलांसिंग से पैसे कमा रहे हैं। वे वेब ऐंड मोबाइल डिवेलपमेंट, वेब डिजाइनिंग, डेटा एंट्री, इंटरनेट रिसर्च, अकाउंटिंग और कंसल्टेंसी जैसे क्षेत्रों में सक्रिय हैं। बहरहाल, चीजें अभी शहरी मिडल क्लास के लिए ही ज्यादा बदली हैं। कोशिश होनी चाहिए कि यह आशावाद देश के हर वर्ग के युवाओं में देखने को मिले।

पूर्णता का अर्थ

अशोक वोहरा। पूर्णता एक सापेक्ष शब्द है। किसी एक स्थिति में पूर्णता का अर्थ अलग हो सकता है तो किसी अन्य में अलग। पूर्णता के संदर्भ में हमारी जो धारणा होती है उसमें भी परिवर्तन हो सकता है, यह हालात और हमारी चेतना के विकास के स्तर पर निर्भर करता है। हालांकि परिवर्तन, केवल भौतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं हैं। भावनात्मक और बौद्धिक स्तर पर, इसके साथ ही सीमित समय के अंदर भी तीव्र गति से परिवर्तन होते रहते हैं, भले ही इसकी जानकारी हमें हो या ना हो। दुख या खुशी, उतार या चढ़ाव सभी परिवर्तन की प्रक्रिया का एक हिस्सा हैं। हम प्रत्येक क्षण का सर्जन करते हैं और फिर उसी का पुनरू सर्जन करते हैं। हम प्रत्येक क्षण को विकसित करते हैं। इसलिए वह परिवर्तन के प्रभाव से डिगते नहीं और स्थिर रहते हैं।

धर्म-दर्शन

संपादकीय

मिस अमैरिकाना

कुछ दिन पहले ऑस्कर के लिए नॉमिनेट की गई फिल्म '1917' देखी और फिल्म–मेकिंग की खूबसूरती देखकर होश उड़ गए। अभी तक उसका असर दिमाग से नहीं गया है। हर किसी को बताने का मन कर रहा है कि देखो, मैंने क्या नया पाया। पता नहीं कोई समझेगा वो एक्साइटमेंट या नहीं। करीब एक हफ्ते पहले वर्ल्ड फेमस सिंगर टेलर स्विफ्ट के म्यूजिक इंडस्ट्री में अब तक के सफर पर बनी डॉक्युमेंट्री 'मिस अमैरिकाना' देखी थी। और दो दिन पहले ही ऑस्कर के लिए नॉमिनेट हुई एक और फिल्म 'जोकर' देखी। दोनों में एक समानता थी– समाज की संवेदनहीनता, निर्दयता।

मिस अमैरिकाना में स्विफ्ट ने उनके करियर के ऐसे कई विवादित वाकयों के बारे में खुलकर बात की है जिन्होंने उनके ऊपर बेहद गहरा असर डाला था। इनमें से एक था लोगों का व्यवहार। बिना उन्हें जाने उनके लिए नफरत होना। दुनिया की इतनी बड़ी सुपरस्टार लोगों की बातों से किस हद तक निराश हो चुकी थी, यह डॉक्युमेंट्री में दिखाया है। इसी तरह 'जोकर' में आर्थर के कैरेक्टर के बारे में उसके आसपास के लोग नहीं जानते और उसका मजाक उड़ाते हैं, उसे तंग करते हैं। हालांकि, इन दोनों का ही नतीजा एकदम उलट होता है। टेलर जहां दूसरों को जवाब देते–देते खुद और भी बेहतर होती जाती हैं, वहीं आर्थर अंधेरे में गिरता जाता है। टेलर और आर्थर की कहानियां देखने के बाद आज जब आधा घंटा बिना कुछ बोले सिर्फ उस बुजुर्ग की बातें सुनती गई, तो लगा कि ये सारी कहानियां आसपास ही होती हैं। हम बिना सोचे–समझे किसी से कुछ भी कहते हैं। सड़क पर चलते हुए धक्का लगे तो झगड़ा कर लेते हैं, सोशल मीडिया पर किसी की बात से नाराजगी हो तो बिना उसे या उसकी सोच को जाने, गालियां तक देने लगते हैं।

ऑनलाइन खाना मंगाने का चलन बढ़ाने में विज्ञापनों ने भी अहम भूमिका निभाई है। नए-नए ऐप्स आ रहे हैं जिनसे मनचाहा खाना जल्दी मंगवाना मुमकिन हो गया है।

बाजार अब लोगों की जेब में

सतीश सिंह।

हमारी लाइफस्टाइल में जबर्दस्त बदलाव आ रहा है। महिलाएं भी पुरुषों की तरह बाहरी काम–धंधों में जुट गई हैं लिहाजा पति–पत्नी दोनों के पास घर में खाना बनाने का वक्त नहीं रहता। ऐसे में बाहर के खाने पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। लोगों की परचेजिंग पावर भी बढ़ी है इसलिए वे खाने पर ज्यादा खर्च करने लगे हैं। कई बार वर्कप्लेस से लौटने के बाद पति–पत्नी इतने थक जाते हैं कि उनके लिए खाना बनाना जी का जंजाल हो जाता है। रेस्टोरेंट जाने की ऊर्जा भी उनमें नहीं बची होती। ऐसे में ऑनलाइन खाना ऑर्डर करने का चलन तेजी से बढ़ रहा है। इंटरनेट और मोबाइल ने ऑनलाइन बाजार को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बाजार अब लोगों की जेब में है। ऑनलाइन खाना मंगाने का चलन बढ़ाने में विज्ञापनों ने भी अहम भूमिका निभाई है। नए–नए ऐप्स आ रहे हैं जिनसे मनचाहा खाना जल्दी मंगवाना मुमकिन हो गया है।

ऑनलाइन खाने–पीने के कारोबार के फलने–फूलने का सबसे बड़ा कारण यह है कि इसका हिस्सा बनने के लिए न तो लक–दक रेस्टोरेंट खोलना जरूरी है, न ही इसके लिए बहुत ज्यादा पूंजी लगाने की आवश्यकता है।

इसमें कम पूंजी लगने के कारण ऐप्स को मिलने वाले मोटे कमीशन के बाद भी ग्राहकों को काफी छूट मिल जा रही है। इसलिए वे ऑनलाइन खाने के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। अब तो कई हाउसवाइव्स भी किसी कंपनी में रजिस्टर्ड होकर अपना खाना बेच रही हैं और कमाई कर रही हैं। दरअसल, नब्बे के दशक में भारत में अपनाए गए उदारीकरण के तहत विदेशी ब्रैंड्स के लिए दरवाजे खोल दिए गए थे, ताकि भारतीय बाजार को ग्लोबल बनाया जा सके। पहले विदेशी ब्रैंड विंपी ने इसी समय अपना आउटलेट दिल्ली के कनॉट प्लेस इलाके में खोला था। इसके एक दशक बाद तमाम विदेशी फूड चेन्स की लाइन लग गई।

बाजार के लगातार फैलते जाने के कारण तरह–तरह के व्यंजन ऑनलाइन उपलब्ध हैं। जायकों में नए प्रयोग भी हो रहे हैं। ऐप्स के जरिए कोई भी चीज अब मनचाही मात्रा में मंगवाई जा सकती है। कोई चाहे तो अपने लिए सिर्फ एक रसगुल्ला मंगवा सकता है। कोई बीमार चाहे तो सादी खिचड़ी मोबाइल के एक क्लिक से उसके घर थोड़ी ही देर में आ सकती है। इसके विपरीत अगर किसी के घर पार्टी है तो सभी मेहमानों के लिए बड़े पैमाने पर खाना आ सकता है। इस पार्टी में जिसको शाकाहारी खाना चाहिए उसको शाकाहारी मिलेगा, जिसको मांसाहारी चाहिए उसको मांसाहारी। समय का भी कोई बंधन नहीं रह गया है। किसी को मुंह अंधेरे नाश्ता करना है या कोई नाइट ड्यूटी से लौटकर रात के तीन बजे खाना चाहता है तो भी ताजा भोजन उसके दरवाजे पहुंचाया जाएगा। निश्चय ही यह एक भोजन क्रांति है, जो न सिर्फ महानगरों में बल्कि देश के छोटे शहरों–कस्बों तक में फैल गई है। यह सूचना क्रांति की ही उपज है। इसमें आपके घर खाना पहुंचाने वाला ठीक उसी तरह जीपीएस का इस्तेमाल करता है, जिस तरह ऐप्स के जरिए आपको ट्रांसपोर्ट सेवाएं उपलब्ध कराने वाली कैब करती है।

अष्टयोग- 4954

		3	4		6	7
7	24	2	32	3	41	
	3		5	6		
6	28		36		30	4
		5	6		1	
5	39	7	43	4	25	
4				1		3

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गाढ़े काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4953 का हल

6	4	1	7	2	5	3
5	33	3	32	1	27	7
4	3	7	5	6	1	2
3	35	2	37	7	32	6
7	4	5	2	3	6	1
2	32	4	36	4	30	5
1	3	6	7	5	2	4

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

राह कैसे निकाली जाए

मोहन। शाहीन बाग धरने पर बैठी महिलाओं और बच्चों पर खतरा मंडरा रहा है। लेकिन न तो प्रदर्शनकारी बिना किसी नतीजे के उठने को तैयार हैं, न ही केंद्र सरकार उनसे बात करने का कोई रुझान दिखा रही है। समाधान के नाम पर ले–देकर कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद का एक बयान है कि सरकार सीएए को लेकर शाहीन बाग के लोगों का भ्रम दूर कर सकती है, बशर्ते वे व्यवस्थित बातचीत का अजेंडा लेकर सरकार से संपर्क करें। सवाल यह है कि इस संवादहीनता से बाहर आने की राह कैसे निकाली जाए? इसका अकेला तरीका फिलहाल यही दिखता है कि समाज के अराजनीतिक प्रतिनिधि ा– धार्मिक नेता, बुद्धिजीवी, सामाजिक संगठनों के प्रमुख शाहीन बाग के लोगों से बात करें। उनका पक्ष समझकर उसे सरकार तक पहुंचाएं और फिर सरकार का पक्ष धरने पर बैठे लोगों को बताएं। चुनाव तक हालात को काबू में रखने का काम सिविल सोसायटी ही कर सकती है।